International Standard
Book Number
(I.S.B.N.)
के
साथ पुस्तकों के प्रकाशन
हेतु सम्पर्क करें।

Suruchi Kala Prakashan
Varanasi
Phone No. : 0542-2310854
Mob. No. : 09450016201

AnnualMembership
For Institutions : Rs.2000
For Individuals : Rs.1500
For Issue Price : Rs.800
Life Membership
For Institutions : Rs. 10,000
For Individuals : Rs. 8,000
For Any Information, Please Contact
PARISHEELAN
Mob. : +91-9450016201
+91-9450819699
e-mail : suruchikalas@yahoo.in
Journalwh@gmail.com

Reg. No.: V27452 ISSN 0974 7222

PARISHEELAN

An International Research Journal

Vol.-XI No. -3 & 4 2015

Suruchi Kala Samiti, Varanasi

Reg. No. V-27452

ISSN 0974 7222

PARISHEELAN

An International Research Journal

Vol-XI No.-3 & 4 Jul-Dec, 2015

Chief Editor
Dr. Anjani Kumar Mishra

Editors
Dr. Arachna Dubey
Dr. Sanjay Kumar
Dr. Preetesh Acharya

Published by
SURUCHI KALA SAMITI
B 23/45, Gha-A-S, Nai Bazar, Khojwan,
Varanasi, U.P. (INDIA) Mob: 9450016201

Patrons

Padamvibhushan Sri Sundar Lal Bahuguna

(Environmentlist)

Prof. S. S. Kushwaha

(Ex. Vice Chancellor M.G. Kashi Vidyapeeth, VNS.)

Editorial Advisory Board

Dr.Lav Kush Dwivedi *(Lucknow, U. P.)*

Prof. Spyridon Rongos *(Greece)*

Prof. Parmanand Singh *(Varanasi, U. P.)*

Dr. Lorenzo Bonavenjura *(Italy)*

Prof. Shyam Nath Mishra *(Khetari, Rajasthan)*

Dr.Giulia Pucchejji *(Italy)*

Dr. Amar Nath Sharma *(Indour, M.P.)*

Prof. Lakshmi Kant Panthi *(Nepal)*

Executive Editor- *Jahangir Alam*

Tech. Advisor - *Devendra Kumar*

A Refereed International Quaterly Research Journal

© SURUCHI KALA SAMITI

Printed by .

Manish Printers, Varanasi

Mob: 09451439690

Published by

SURUCHI KALA SAMITI

B 23/45, Gha-A-S, Nai Bazar, Khojwan,

Varanasi, U.P. (INDIA) Mob. 09450016201

e-mail : suruchikalas@yahoo.in

Note : *Scholars will be answerable to the contents of their articles.*

Contents

Flanders Interaction Analysis Category System : A Tool To Become An Effective Teacher **1-8**
Mrs. Arti Srivastava, Dr. J.P. Srivastava

School Education through ICT **9-12**
Dr. Mukesh Kumar

Community Policing : A Case Study of Chandigarh Police **13-26**
Dr. Sanjeev Ranjan

"Narrative Method in Indo - English Poetry" **27-32**
Md. Buland Akhtar

Rights of Indigenous People : National and International Perspective **33-40**
Amit Mishra

शरीरविज्ञानविमर्श **41-48**
डॉ० जयमंगल पाण्डेय

भारतीय संगीत की अवधारणा **49-54**
रुचिरा बन्दोपाध्याय

कृष्ण भक्त कवियों का कीर्तन परम्परा के विकास में योगदान **55-62**
राधा कमल

धर्म : एक दार्शनिक विवेचन **63-66**
हरिकेश कुमार त्रिपाठी

नेहरू के सांविधानिक विचार में जनवाद की धारणा **67-72**
अनिता पासी

पनघट व कत्थक 73-76
डॉ० वन्दना चौबे

विष्णुपुराण में वर्णित विष्णु– भक्ति का स्वरूप 77-80
अरुण कुमार

विवेकानन्द के धर्म और मानवतावाद के प्रत्ययों का दार्शनिक विवेचन 81-90
सीमा देवी

प्रशासनिक विधि के अन्तर्गत प्रशासकीय विवेकाधिकार का न्यायिक पुनर्विलोकन 91-96
डॉ० अमित कुमार श्रीवास्तव

किसानों का संकट और प्रेमचंद के विचार 97-104
सुशील कुमार सिंह

केन्द्रीय प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन में मंत्रिमंडल सचिव : एक अध्ययन 105-106
विजय कुमार

नैतिक शिक्षा के आलोक में अभिनवपंचतन्त्रम् 107-112
डॉ० डॉली जैन

प्राचीन भारतीय साहित्य में विदेशियों के प्रति प्रतिक्रिया और उसका ऐतिहासिक मूल्यांकन 113-118
डॉ० श्वेता गुप्ता

गाँधी युग में अस्पृश्यता की समस्या 119-126
डॉ० अवध किशोर प्रसाद, विद्यानन्द राम

भूमण्डलीकरण के दौर में टेलीविजन संस्कृति एवं शिक्षा 127-130
शिव बचन सिंह यादव

गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का निर्माण : एक अध्ययन 131-134
सुरेन्द्र सिंह

प्रसाद के कथा साहित्य में "ऐन्द्रिय–आनन्द" 135-138
अरविन्द कुमार सिंह

उत्तररामचरितम् में चित्रकला के तत्त्व 139-146
डॉ० शशिकुमार सिंह

मध्यकालीन भारतीय समाज 147-152
आलोक कुमार

भोज की नूतन कथासंक्षेपण–शैली (चम्पूरामायण के सन्दर्भ में) 153-158
डॉ० रामहेत गौतम

प्राकृतिक असन्तुलन के सन्दर्भ में औपनिषदिक चिन्तन की उपादेयता 159-162
वाचस्पति मिश्र

अभिनवपञ्चतन्त्र 163-166
डॉ० ललित पटेल

मयूरदूत में अंलकार योजना 167-170
प्रो० अर्चना दुबे

सुभाषित साहित्य में चित्रित जन–जीवन 171-178
डॉ० नौनिहाल गौतम

गाँधीवादी एवं स्वराज्य पार्टी 179-184
डॉ० देवेन्द्र कुमार सिन्हा

उपनिषद् दर्शन : एक चिन्तन 185-192
भावना शुक्ला

उच्च शिक्षा में गुणात्मक ह्रास एवं बढ़ती शिक्षित बेरोजगारी 193-198
डॉ० अवध बिहारी सिंह

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन 199-204
राजेश कुमार यादव

उत्तर प्रदेश में स्त्री शिक्षा का अनुशीलन 205-210
रमेश चन्द्र

रुचियाँ एवं उनका विकास 211-214
शिव प्रताप श्रीवास्तव

प्रसाद के कथा साहित्य के सभी प्रमुख पात्र इस आनन्द के लिए अग्रसर होते हुए दिखाई देते हैं। चन्द्रगुप्त का चाणक्य उद्देश्य पुर्ति के पश्चात् ऐसे ही शान्तिमय आनन्द की खोज में निकल पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. "जनमेजय का नागयज्ञ".....जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं. 66

2. "तितली" .....जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं. 243

उत्तररामचरितम् में चित्रकला के तत्त्व

डॉ. शशिकुमार सिंह*

सदियों से प्रकृति जहाँ जीवन के चिर सहचरी के रूप में जीवन में नवोन्मेष का संचार करती रही है वहीं जीवन भी प्रकृति को या तो अपने अनुकूल करने का यथेष्ट प्रयास करता रहा है अथवा स्वयं को प्रकृति के अनुकूल कर पाने के लिए सतत यत्नशील रहा है। सभ्यता के उषःकाल में ही आरम्भ हुए प्रकृति और जीवन के इस साहचर्य के परिणामस्वरूप मानव जीवन में सांस्कृतिक चेतना का विकास हुआ, जिसे लोक में कला के नाम से जाना गया। इस कला के द्वारा ही मानव जीवन को नई दिशाओं का निर्देश प्राप्त हुआ और मानव अपने अन्तर्मन के कोमल क्रोड़ में छिपी स्निग्ध भावनाओं की सहज एवं सुन्दर अभिव्यक्ति कर पाने में समर्थ हो सका।

संस्कृत साहित्य में भी कलाओं का प्रयोग प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। कला शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही दृष्टिगोचर होने लगता है। ऋग्वेद में कला शब्द का प्रयोग द्रष्टव्य है।

यथा कला, यथा शफ, मघ, शृण स नियामति'

'नाट्यशास्त्र में आचार्य भरतमुनि ने कला के महत्त्व को स्वीकारते हुए कहा है–

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला'

(ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कोई शिल्प नहीं, ऐसी कोई विद्या नहीं जो कला न हो)

संस्कृत साहित्य के महान् नाटककार महाकवि भवभूति ने भी उत्तररामचरित नाटक के मंगलाचरण में कला को नमन किया है।

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमोवाकं प्रशास्महे।
वन्देमहि च तां वाचममृतामात्मनः कलाम्।।[1]

'कला' शब्द की व्युत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है 'प्रेरित करना। कुछ विद्वान् इसकी व्युत्पत्ति 'कम्' धातु से मानते है– "कं (सुख) लाति इति कलम्, कम् आनन्दं लाति इति कला।'

इस प्रकार सुन्दर, मधुर, कोमल और सुखद शिल्प ही कला है। दूसरे शब्दों में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की अभिव्यक्ति को ही कला कहते हैं।

*सहायक प्राध्यापक–संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, म.प्र.470003